Friday, 29 May, 1964

लोक-सभा वाद-विवाद
का
संक्षिप्त अनूदित संस्करण

SUMMARISED TRANSLATED VERSION OF 3rd LOK SABHA DEBATES

तृतीय माला

Third Series

खण्ड ३२, १९६४/१८८६ (शक)

Volume XXXII, 1964/1886 (Saka)

[२७ मई से ५ जून, १९६४/६ ज्येष्ठ से १५ ज्येष्ठ, १८८६ (शक)]

[May 27 to June 5, 1964/Jyaistha 27 to Jyaistha 15, 1886 (Saka)]

Preservation Unit
Digitized On 14.12.8
Parliament Library

आठवां सत्र, १९६४/१८८६ (शक)

(Eighth Session, 1964/1886 (Saka)

(खण्ड ३२ में अंक १ से ७ तक हैं)

(Volume XXXII contains Nos. 1 to 7)

लोक-सभा सचिवालय,
नई दिल्ली

LOK SABHA SECRETARIAT
NEW DELHI

[यह लोक-सभा वाद-विवाद का संक्षिप्त अनूदित संस्करण है और इसमें अंग्रेजी/हिन्दी में दिये गये भाषणों आदि का हिन्दी/अंग्रेजी में अनुवाद है ।

This is translated version in a summary form of Lok Sabha Debates and contains Hindi/English translation of speeches etc. in English/Hindi]

805(Ai) LS—1.

विषय-सूची

अंक २—शुक्रवार, २९ मई, १९६४/८ ज्येष्ठ, १८८६ (शक)

विषय	पृष्ठ
निधन सम्बन्धी उल्लेख	७३—८९
श्री जवाहरलाल नेहरू का देहावसान	७३—८९
श्री नन्दा	७३—७५
श्री ही० ना० मुकर्जी	७५–७६
श्री रंगा	७६–७७
श्री सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी	७७–७८
श्री बृजराज सिंह	७८–७९
श्री कर्णी सिंहजी	७९
श्री याज्ञिक	७९–८०
डा० गोविन्द दास	८०–८१
श्री राम सेवक यादव	८१
श्री मनोहरन	८१
श्री मौर्य	८१–८२
श्री प्रकाशवीर शास्त्री	८२
श्री मुहम्मद इस्माइल	८२–८३
श्री कृपालानी	८३–८४
श्री बिशनचन्द्र सेठ	८४–८५
श्री बदरुद्दुजा	८५
श्री कपूर सिंह	८५–८६
श्री अ० क० गोपालन	८६
अध्यक्ष महोदय	८६—८९

CONTENTS

No. 2 PAGES

Friday, May 29, 1964/*Jyaistha* 8, 1886 (*Saka*)

Obituary reference . . .	73—89
Demise of Shri Jawaharlal Nehru .	73—89
Shri Nanda	73—75
Shri H. N. Mukerjee	75-76
Shri Ranga	76-77
Shri Surendranath Dwivedy	77-78
Shri Brij Raj Singh	78-79
Shri Karni Singhji	79
Shri Yajnik	79-80
Dr. Govind Das	80-81
Shri Ram Sewak Yadav . . .	81
Shri Manoharan . .	81
Shri Maurya	81-82
Shri Prakash Vir Shastri . .	82
Shri Muhammad Ismail	82-83
Shri J. B. Kripalani	83-84
Shri Bishanchander Seth	84-85
Shri Badrudduja	85
Shri Kapur Singh	85-86
Shri A. K. Gopalan	86
Mr. Speaker	86—89

लोक-सभा

LOK-SABHA

शुक्रवार, २६ मई, १९६४/८ ज्येष्ठ, १८८६ (शक)

Friday, May 29, 1964/Jyaistha 8, 1886 (Saka)

लोक-सभा ग्यारह बजे समवेत हुई

The Lok Sabha Met at Eleven of the clock

[**अध्यक्ष महोदय** पीठासीन हुए
MR. SPEAKER *in the chair*]

निधन संबंधी उल्लेख

OBITUARY REFERENCE

श्री जवाहरलाल नेहरु का देहावसान

Demise of Shri Jawaharlal Nehru

प्रधान मंत्री, वैदेशिक-कार्य मंत्री, अणु शक्ति मंत्री तथा गृह-कार्य मंत्री (श्री नन्दा) : अध्यक्ष महोदय, आज हम एक अत्यन्त दुखद वातावरण में एकत्र हुए हैं । एक अभूतपूर्व दुखान्त घटना हमारे साथ घटी है । इस घटना से सारे देश को धक्का पहुंचा है और प्रत्येक पुरुष, स्त्री तथा बालक इस व्यक्तिगत क्षति की गहरी चोट से स्तब्ध रह गया है । इस अवसर पर अपनी मनोवेदना को व्यक्त करने में मैं अपने आप को असमर्थ पाता हूं ।

आज ससद् श्री जवाहरलाल नेहरू की स्मृति में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये एकत्र हुई है । वह संसद् में उपस्थित होने के लिये बुधवार के दिन समय पर लौट आये थे परन्तु विधि का विधान कुछ और ही था । हमारे पास शब्द नहीं हैं कि जिन के द्वारा अपने प्रिय नेता के चल बसने पर हम अपनी संवेदना व्यक्त कर सकें । इस समय समस्त संसार शोकमग्न है । संसार के कोने-कोने से जो संवेदना सन्देश हमें प्राप्त हुए हैं उन से हमें सच्ची सांत्वना मिली है । श्री जवाहरलाल नेहरू का महत्व उतना ही समस्त मानवजाति के लिये था जितना कि भारत के लिये । एक भारतीय होने के नाते उन्होंने मानवजाति की सेवा की और भारत की समस्यायें और आकांक्षायें उन के लिये मानव-जाति के स्वंत्रताबसंघर्ष और उसके शांति, सामाजिक न्याय, मानव मूल्यों तथा मानव की गरिमा सम्बन्धी संघर्षों का एक अंग-मात्र थीं ।

उन्होंने राष्ट्रपिता द्वारा दी गयी स्वतंत्रता की परम्पराओं को बहुत अच्छी तरह निभाया । राष्ट्रीय उद्देश्यों को उन्होंने एक नया महत्व प्रदान किया और उन्हें प्राप्त करने के लिये नवीन दिशा

[श्री नन्दा]

निर्धारित की । अनेकों कठिनाइयों के होते हुए भी वह गांधी जी द्वारा दिखाये गये सत्य मार्ग पर चलते रहे । उसी सत्य मार्ग पर चलते हुए अन्त में हमारे उद्देश्य फलीभूत होंगे ।

जवाहरलालजी जो कुछ थे और जो काम उन्होंने अपने जीवन-काल में किये, शब्दों द्वारा उनकी प्रशंसा करना या उनके लिये उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करना असम्भव है । कई वर्षों तक भारतीय जीवन में उनका इतना महत्वपूर्ण स्थान रहा कि आज उनकी अनुपस्थिति से ऐसा लगता है कि हम भटक गये हैं । राष्ट्रीय स्वतंत्रता को भी वह अपनी विशाल दृष्टि से देखते थे, इसी कारण हमारे स्वतंत्रता-संग्राम के यह महान नेता स्वतंत्र भारत के महान कर्णधार बने । १७ वर्ष तक आत्म-समर्पण एवं निष्काम सेवा कर के उन्होंने एक नये भारत का निर्माण किया । उन्होंने भारतीय विचारधारा एवं आकांक्षाओं को प्रभावित किया । वह भारत की जनता के प्रतीक थे । वह उनके उद्देश्यों, उनकी इच्छाओं और उन के संघर्षों के साकार रूप थे । उन्होंने जनता को विश्वास दिया और उन के नये मार्गों को प्रकाशमान किया । वह ऐसी महान् परम्परा छोड़ गये हैं जिसका अन्य उदाहरण नहीं मिलता । उनका जीवन भारत तथा समस्त मानवजाति की सेवा में बीता जो भावी सन्तानों के लिये एक अमूल्य और चिरस्थायी सन्देश बन कर रहेगा । मुझे आशा है कि वर्तमान पीढ़ी, जिस पर उन्होंने अपना सर्वस्व बलिदान किया, उन उद्देश्यों के योग्य सिद्ध होंगे जो उन्होंने हमें विरासत में दिये हैं ।

उनका निधन एक ऐसे समय में हुआ है जो राष्ट्र के लिये और संसार के लिये अत्यन्त संकटमय है । उनके महान सिद्धान्त और उन पर आधारित राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय नीतियां हमारा सहारा बन कर रहेंगी । हमारे सामने बड़ी बड़ी जिम्मेदारियां हैं । मुझे विश्वास है कि लोग इन जिम्मेदारियों को निभा सकेंगे । यह संसद् भारत की जनता की इच्छाओं और विचाराधाराओं का साकार रूप है । मुझे आशा है कि हम सब देश के निर्माण में, न्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था कायम करने में और अपनी स्वाधीनता एवं जनतंत्र का समेकन करने में अपने सभी साधन जुटा देंगे । और इस प्रकार संविधान में उल्लिखित उद्देश्यों को पूरा करेंगे । यही हमारी श्री जवाहरलाल नेहरू के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी ।

जनतंत्र एवं संसदीय संस्थाओं के संचालन में वह सब से अधिक बल इस बात पर देते थे कि देश में राष्ट्रीय मतैक्य हो और सभी मिल कर प्रगति की ओर अग्रसर हों । परन्तु, जैसे कि स्वयं उन्होंने कहा था, यदि भारतीय जनसमुदाय को एक सुखद जीवन व्यतीत करना है तो विश्व-शांति का होना अनिवार्य है । इसलिये राष्ट्रीय प्रगति की दृष्टि से शांति का होना पहली शर्त है । अल्प विकसित और गरीब देशों का होना शांति के लिये एक बहुत बड़ा खतरा है । इस प्रकार उन के जो अपने देश के अन्दर प्रयास थे वह मानव जाति की स्वाधीनता बनाये रखने सम्बन्धी महान उद्देश्यों का एक भाग मात्र थे । यही उद्देश्य उन के कामों और विचारधाराओं को एकसूत्रता प्रदान करते थे ।

हमारी श्रद्धांजलि श्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा की गई जनता की सेवा और उनके उन आदर्शों के प्रति श्रद्धा की द्योतक है जिन उद्देश्यों को समक्ष रख कर उन्होंने अपना जीवन व्यतीत किया ।

भारत को श्री जवाहरलाल नेहरू पर गर्व है । भारत उनका आभारी है । हम उन्हीं के मिशन को पूरा करने के लिये संघर्ष करेंगे ।

हम श्रीमती इन्दिरा गांधी के प्रति सहानुभूति और स्नेह व्यक्त करते हैं । उन्होंने जिस श्रद्धा से अपने पिता की सेवा की उस के लिये राष्ट्र उनका ऋणी है । हम उनके शोक में भागी हैं और यह

प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर उन्हें शक्ति और साहस प्रदान करे। संतप्त परिवार के सभी सदस्यों के लिये हम हार्दिक सहानुभूति व्यक्त करते हैं।

श्री ही० ना० मुकर्जी (कलकत्ता–मध्य) : मैं अपनी ओर से और संसद् में साम्यवादी दल की ओर से श्री जवाहरलाल नेहरू के निधन पर संवेदना व्यक्त करता हूं। काल तो अवश्यम्भावी है परन्तु जो स्थान रिक्त हुआ है वह कभी पूरा नहीं हो सकेगा। जवाहरलालजी के बिना यह संसद् और यह देश उजड़ा हुआ है और हमारे लिये, जो उन से अत्यधिक प्रेम करते थे संवेदना व्यक्त करन भी कठिन हो रहा है। इस शोकमयता की स्थिति में हमें अपने आप को सम्भालने में भी समय लगेगा।

मैं उनके जीवन की कहानी का उल्लेख करने की जरूरत नहीं समझता। यौवन काल में उनका स्वाधीनतासंग्राम में भाग लेना, उन का विश्वव्यापी दृष्टिकोण जिस के कारण उन्होंने अपने संग्राम और एशिया, अफ़्रीका तथा अन्य स्थानों में दलित जनता के संग्राम में सम्पर्क स्थापित किया, धर्मनिरपेक्षता एवं जनतंत्र के प्रति उनकी आस्था और जनकल्याण जिस के कारण उन्होंने समाजवाद को अपनाया, आर्थिक आयोजन तथा विश्व शांति, यह सब बातें उन के जीवन की खुली पुस्तक हैं। वह मानव थे इसलिये अडिग नहीं थे परन्तु वह सदैव उदात्त पुरुष थे और उन्होंने निरन्तर सक्रिय जीवन व्यतीत किया। प्रायः वह राजनीति में अपने आप को अकेला ही पाते थे परन्तु इस के बावजद भी जितने प्रिय वह रहे उतना शायद ही कोई अन्य व्यक्ति रहा हो। भारतीय जनता के दिलों में वह अमर स्थान प्राप्त कर गये हैं। संसार के राजनीतिक क्षेत्र में अनेक राजनीतिज्ञ हुए हैं परन्तु श्री जवाहरलाल एक श्रेष्ठ व्यक्ति थे। उन में दया का भाव उसी प्रकार था जैसा कि इसके विषय में सेंट पाल ने कारीथियन्स को बताया था। इस से भी बढ़ कर, उन में अनुकम्पा का गुण वैसे ही था जैसे कि बुद्ध ने हमें सिखाया। यह गुण किसी अन्य व्यक्ति में मिलना कठिन है।

वह स्वतन्त्र भारत के निर्माता थे। उन्होंने अपने देश के लिये और संसार के लिये बड़े बड़े काम किये। परन्तु उनके जीवन को एक सफल जीवन कह देना ही काफी नहीं है। वह बहुत सी कठिन समस्यायें छोड़ गये हैं। परन्तु जिस प्रकार वह लड़े उसका अन्य उदाहरण उनके काल में नहीं मिलता। देश में और देश से बाहर वह संवेदनशीलता और भ्रात्रता भाव के लिये लड़े और उन गुणों की उपेक्षा करके आज का भटका हुआ संसार प्रगति नहीं कर सकता। मुझे आशा है कि यही गुण सदैव हमें प्रिय रहेंगे।

जवाहरलाल के अतिरिक्त अमर कथनों को खूबसूरत सादगी के साथ कौन कह सकता था? गुरबत और युद्ध की सी बुराइयों के बारे में कुछ समय पूर्व जो यह शब्द उन्होंने कहे वह और कौन कह सकता था कि मानवजाति के अश्रुओं से आज सात महासागर भर सकते हैं? जवाहरलाल के सिवाय और किस के मन और हृदय मे वह दर्द था जिसके कारण वह "वसुदैव कुटुम्बकम" के सिद्धान्त को अपने जीवन मे पूरा उतारा।

वह कर्म को ही एकमात्र उपासना समझते थे और जैसे कि वह चाहते थे उनका अन्त भी कर्म करते हुए हुआ। उनका अन्त हो गया परन्तु जीवन अनन्त है। उनसे प्रेरणा पाते हुए हमें भावात्मकता और अकर्मण्यता को त्यागना है। सभी सदभाव रखने वालों को मिल कर उन की परम्परा को जीवित रखना चाहिए, एक नवीन भारत के निर्माण के लिये संघर्ष करना चाहिए, गुरबत और अन्धविश्वास तथा पंजीवाद के अन्धकार से छुटकारा पाना चाहिए, एकता स्थापित करनी चाहिए और विश्व-शान्ति एवं कल्याण के कार्य में लगना चाहिए।

[श्री ही० न० मुकर्जी]

आज हम मिल कर प्रतिज्ञा करें कि यदि प्रतिक्रियावादी और पुनः प्रवर्तनवादी सर उठायेंगे तो उन्हें पराजित करने के लिये हम कोई कसर उठा नहीं रखेंगे ।

श्री जवाहरलाल नेहरू के उत्तराधिकारी को काफी कठिनाइयों का सामना करना होगा चूंकि जो काम उन्होंने किया वह कोई दुर्बल व्यक्ति नहीं कर सकेगा । यदि श्री नन्दा और उनके सहयोगी उन्हीं नीतियों को कार्यान्वित करें जिनके प्रति श्री नेहरू आस्था रखते थे तो हम अवश्य उनको सहयोग देंगे । उनकी नीतियों में समाजवाद, गतिशील तटस्थता, जिन देशों ने हमारे समान संघर्ष किये हैं उनके साथ मित्रता आदि बातें शामिल थीं । वह चाहते थे कि भारत युद्ध के बिना ही संसार में अपने लिये उपर्युक्त स्थान प्राप्त करे ।

हमने एक श्रेष्ठ व्यक्ति खो दिया है,जिसने कभी संकीर्णता नहीं दिखाई, जिसने राजनीतिक कार्यों मे काव्यात्मक और ऐतिहासिक दृष्टि रखी । वह बच्चों के प्रेमी थे, पशुओं से सहानुभूति रखते थे। वह भद्र कोलोसस के समान थे ।

जवाहरलाल नेहरू का देहावसान हो गया है परन्तु वह तब तक अमर रहेंगे जब तक भारत देश जीवित है ।

श्री रंगा (चित्तूर) : यह एक ऐसा अवसर है जबकि हम अपने प्रिय मित्र के अच्छे गुणों तथा महानताओं का स्मरण कर सकते हैं । हम में से कुछ ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें अधिक नहीं तो कम से कम गत ४० वर्षों से उनके साथ कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है ।

मैं, उनके सर्वाधिक वरिष्ठ सहयोगी तथा साथी, राजाजी, स्वतन्त्र पार्टी तथा स्वयं अपनी ओर से, केवल अपने महान नेता की सराहना ही नहीं अपितु उनकी मत्यु से देश को तथा विश्व को हुई क्षति के बारे में शोक प्रकट करना चाहता हूं ।

जवाहरलाल जी ने महात्मा गांधी द्वारा दी गई महान परम्पराओं का बड़े सम्यक प्रकार से अनुसरण किया । वे महात्मा गांधी के सच्चे अनुयायी और सहयोगी थे, उन्होंने उनके साथ काम किया, उन्होंने साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष करने में हमारा नेतृत्व किया । उहोंने भारत के स्वतन्त्रता संग्राम को इस प्रकार चलाया जिससे विश्व के अन्य देशों को स्वतन्त्रता संग्राम के लिये प्रेरणा मिली । यह उनका सौभाग्य था कि उन्हें अन्य सब राष्ट्रीय नेताओं केसाथ मिल जुल कर साम्राज्यवाद को अन्त करने का श्रेय उन्हें मिला; सम्पूर्ण विश्व में सब लोगों के लिये स्वतन्त्रता का आविर्भाव उन्हीं के युग मे हुआ । भारत को इस दिशा में जो सफलता मिली है वह गौरव का विषय है और इस महापुरुष के प्रति भारत आभार प्रदर्शन करना है । श्री नेहरू ने भारत के प्रधान मन्त्री के रूप में देश की समृद्धि के लिये अपनी सम्पूर्ण शक्ति और प्रभाव का प्रयोग किया ।

विश्व राजनीति के प्रांगण में, श्री नेहरू ने शान्ति स्थापना के लिए प्रयास किया और काफी समय तक हमने उनसे सहमत होकर उनके इस कार्य में सहयोग दिया इन सबके परिणाम बहुत अच्छे हुए । विश्व शान्ति की दिशा मे उन्होंने जो कार्य किया है संयुक्त राष्ट्र संघ उसका प्रबल साक्षी है ।

भारत की चर्चा करते हुए यह सुयोग श्री नेहरू को ही प्राप्त प्राप्त हुआ कि वह हमारे देश वासियों की विचारधारा में परिवर्तन कर उन्हें सुख और समृद्धि के मार्ग पर प्रशस्त करने के लिए प्रजातन्त्र का आश्रय लें अथवा तानाशाही मार्ग अपनाये । उन्होंने प्रजातांत्रिक माध्यमों का वरण किया और वह जातांत्रिक प्रणाली के प्रतीक सतत और अनवरत रूप में कटिबद्ध रहे । कई अन्य महान व्यक्ति,

जो स्वयं असाधारण थे और जिन देशों में उनका अद्वितीय स्थान था' प्रजातांत्रिक प्रणाली और परम्पराओं के अनुपालन में लड़खड़ा गये। जबकि अपने प्रधान मन्त्री पद की १७ वर्ष की लम्बी अवधि में, सदैव प्रजातन्त्र के कटटर समर्थक रहे। इस देश में प्रजातांत्रिक शासन प्रणाली को विकसित करने में उन्होंने अमूल्य योगदान दिया। सरकारी पक्ष के कई सहयोगियों के लिये वस्तुतः यह एक अमूल्य विरासत सिद्ध हुई है कि उन्हें ऐसे युग पुरुष के साथ काम करने का सौभाग्य मिला। हम, विरोधी पक्ष के सदस्य, जिन्होंने श्री नेहरू और सरकार की कई कार्यों की आलोचना, स्तुति, प्रशंसा और प्रशस्ति की है, वह भी वस्तुतः कम सौभाग्यशाली नहीं हैं।

अभी बहुत समय तक हमारे लिये उनके अभाव को सहन करना बहुत कठिन होगा। १७ वर्ष से भी अधिक समय हो गया है जब से कि हम उन्हें संसद में बैंठे देखते चले आ रहे हैं। अपनी बीमारी के दिनों में भी जब कि उनके लिये यहां बैठना सम्भव नहीं था हम यही सोचते थे कि वह यहां आकर बैठते। और जब कभी भी हम उनसे यहां आने के लिये कहते तो वह निश्चय ही आ जाते। परन्तु अब वह आशा खत्म हो गई है और हमें यहां अकेले बैठते हुए बड़ा दुःख होता है। जब तक वह यहां रहे वह अपनी पूरी शक्ति से काम करते रहे और हम जो भी प्रश्न पूछते थे उसका उत्तर देते रहे। हमारा उनके प्रति व्यवहार सदैव उदारतापूर्ण नहीं रहा फिर भी हम उसकी इस बात की प्रशंसा करते हैं कि वह कमजोरी की स्थिति में भी पूरे उत्साह से काम करते रहे। हमारा यह बड़ा सौभाग्य है जो हमे उनका वह लम्बा भाषण सुनने को मिला जो उन्होंने पिछली बार इस सभा में दिया था।

हमें बहुत कुछ कहना है और हमने उनकी नीतियों की आलोचना में बहुत कुछ कहा जो कि सदन की कार्यवाही के विवरण में मौजूद है। उन्होंने हमारे बारे में जो कुछ कहा वह भी कार्यवाही के विवरण में मौजूद है। इस प्रकार के विवरण संसार के उन भागों में नहीं मिलेंगे जिनमें प्रजातन्त्र नहीं है। वे इस बात के प्रतीक हैं कि श्री नेहरू की प्रजातन्त्र में कैसी अगाध श्रद्धा थी। हम उसे कभी भी नहीं भूल सकेंगे।

यह ऐसा अवसर है—हालांकि आपने बहुत अच्छा किया जो कल की सभा की बैठक रद्द कर दी थी—जबकि हम सम्भवतः अपने कार्य का पालन उतने उत्साह से नहीं कर सकेंगे जितना कि संसदीय पद्धति के लिए आवश्यक है और मैं सोचता हूं क्या इस अधिवेशन को जारी रखना चाहिए? लोकसभा का सत्र अगस्त में होना था और हम अगस्त में ही उसमें भाग लेने यहां आते परन्तु विधि का ऐसा विधान था कि उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि संसद का सत्र इसी समय हों और जब हमारे मध्य न हों तो उस दुखद परिस्थिति का सामना करें। इसलिये मैं यह चाहूंगा कि मेरे सहयोगी इस बात पर विचार करें कि हमें कुछ समय के लिये यह बैठक स्थगित कर देनी चाहिये ताकि हम वह स्फूर्ति प्राप्त कर सकें जो कि सभा के कार्य के लिये आवश्यक है और जिसे जवाहरलालजी पसन्द करते थे। धन्यवाद।

श्री सुरेन्द्र नाथ द्विवेदी (केन्द्रपाड़ा) : अध्यक्ष महोदय, मैं इस अवसर पर अपनी तथा प्रजा समाजवादी दल की ओर से अपने महान नेता पंडित जवाहरलाल नेहरू को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और महान शोक प्रकट करता हूं। उनके निधन से देश का एक सच्चा नेता अब इस संसार से विदा हो गये हैं। वे इस सभा के ही नेता नहीं थे अपितु सारे विश्व के लोगों के नेता थे। वे एक शांतिप्रिय तथा एक महान लोकतन्त्रवादी थे। उन्होंने भारत को ही आजाद नहीं कराया अपितु स्वाधीनता संग्राम को विस्तृत दृष्टिकोण प्रदान किया और सदैव अन्तर्राष्ट्रीय बन्धुत्व के लिये ही कार्य किया। इस

[श्री सुरेन्द्र नाथ द्विवेदी]

देश में यह नया दृष्टिकोण लाने के लिये वे बहुत हद तक जिम्मेदार थे। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भी सरकार के नेता के रूप में उन्होंने इन नीतियों का अनुसरण करने के लिये भरसक प्रयत्न किये। उनके महान व्यक्तित्व के कारण देश को नई प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। समूची मानव जाति को अपने महान् उद्देश्य के ओर ले जाने के लिये अब वे इस संसार मे नहीं रहे हैं। उनके दिल में संसदीय संस्थाओं के प्रति बहुत आदर था और चूंकि वे लोकतन्त्र मे पूर्ण निष्ठा रखते थे इसलिये उन्होंने जो पम्परायें स्थापित की हैं समूचे देश की भलाई के लिये भविष्य में उनका पालन किया जाना बहुत जरूरी है। विरोधी दल के सदस्य होने के नाते हम उनसे झगड़ते रहे हैं और सरकार के नेता के रूप में उनके द्वारा अपनाई गई कुछ नीतियों से असहमत भी रहें हैं फिर भी हमारे दिल में इस प्रकार की लगाव की भावना थी कि हम सब एक हैं। यह लगाव की भावना उस समय बहुत ही जरूरी थी जबकि देश में लोकतन्त्र का निर्माण किया जा रहा था। किसी अन्य व्यक्ति के लिये देश में वह भावना पैदा करना बहुत कठिन है ताकि समूचा राष्ट्र उनके आदर्शों को बनाये रखने के लिये मिल कर काम कर सके। उन्होंने देश में जिस महान लोकतन्त्र की नींव रखी है हमें उसको शक्तिशाली और समृद्ध बनाना है। इसलिये लोकतन्त्र, धर्म निरपेक्षता, राष्ट्रीयता और समाजवाद के आदर्शों को बनाये रखने के लिये, जिनके वे सच्चे समर्थक थे और जिनके लिये यह देश वचनबद्ध है, हम सबको मिल कर कार्य करना चाहिये। देश के अन्य लोगों के साथ साथ मैं फिर से उनकी दुखद मृत्यु पर अपनी हार्दिक समवेदना प्रकट करता हूं।

Shri Brij Raj Singh (Bareilly): Mr. Speaker, Sir, I rise to pay tributes to our departed leader on behalf of the Jan Sangh Party of India and on my own behalf.

We have lost a great son of our great country. I do not know how to pay my tributes to him in such a grief-stricken state of mind. I have the honour of playing in his lap and on account of this affinity my sense of grief is still greater. Jawaharlal Nehru, who had been residing near Trimurti for the last 17 years, drew great inspiration of patriotism from the three great sons of India—"Lal, Bal and Pal" and he had also the guidance from the man of the era, Mahatma Gandhi. That is why he had always the vision of the whole country before him.

Though he belonged to Uttar Pradesh, Yet he developed a broad outlook from the very Childhood, and therefore he had become the true symbol of India. All of our countrymen are paying tributes to him and feel as if a member of their own family has passed away. This very feeling is a proof of his being a true Indian which we have to keep before us as an ideal. He was a true devotee of Mother India. For him the 48 crores people of India represented Mother India and he used to say that India is faced with 48 crore problems that is the upliftment of everyone of them was his cherished dream.

Where as he was a "Jawahar" for India and her people, he was also a great apostle of peace for the whole of mankind. The tributes that are being showered upon him for the last two days from every corner of the world amply demonstrate this fact. He was for preservation of world peace at all costs. The great sons of India who had the imprint of Indian culture and tradition upon their character can only hope to place before the world the ideal of peaceful co-existence. He gave the world politics the ideal of non-alignment and "panchsheel" which was the product of Indian tradition & culture while paying our tributes to him we should resolve to preserve the integration of the country at all costs in order to serve India truely and to preserve peace in the world. This will be

a fitting tribute to him. I pray that the son of "Lal, Bal and Pal" inspire democrate Jawaharlal will continue to guide this House, this country and t rest of the world for ever.

श्री कर्णी सिंहजी (बीकानेर) : अध्यक्ष महोदय, स्वतन्त्र संसदीय दल की ओर से मैं प्रिय प्रधान मंत्री के निधन पर गहरा शोक प्रकट करता हूं और श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। इस समय हमारे प्यारे नेता के निधन से हमारे देश के इतिहास का एक महान युग समाप्त हो गया है। हमारे प्रिय प्रधान मंत्री ने गांधी जी के साथ स्वतन्त्रता संग्राम में बड़ा भाग लिया आज उन्हीं के कारण हम अपने आप को स्वतन्त्र देशवासी अनुभव कर रहे हैं। दिल को यह समझाना बड़ा कठिन बन गया है कि हमारे प्रधान मंत्री आज हमें अकेला छोड़ गये हैं।

हमारे लिये यह बड़े गर्व की बात है कि विश्व के अनेक देशों के लोगों ने हमारे स्वर्गवासी प्रधान मंत्री को श्रद्धांजलि अर्पित की है निस्संदेह ही हमारे प्रधान मंत्री विश्व के नेता थे और हमारे लिए यह बड़े गर्व की बात है। उन की एक बड़ी खूबी यह थी कि वह सब लोगों को एक सामन समझते थे और न्याय में उनका दढ़ विश्वास था। उनमें बलिदान देने की बड़ी भावना थी और वह सचाई और ईमानदारी में विश्वास रखते थे उन्होंने हमें यह भी सिखाया कि प्रेम प्रेम को आकर्षित करता है इसके अतिरिक्त उन्होंने हमें धर्म निरपेक्षता का पा पढ़ाया जिसकी आज हमारे देश में बड़ी आवश्यकता है। हमारे प्रधान मंत्री महलों में रहते हुए भी सदैव हमारे गरीब लोगों में विचार मग्न रहते थे। उनके सामने एक बड़ा कार्य गरीबी को दूर करना था आज यह कार्य अधूरा है और हमें इसे संगठित होकर पूरा करना है। यह वास्तव में हमारे लिये बड़े सम्मान की बात है कि हम इस सभा में, संसद के सदस्यों के रूप में प्रधान मंत्री नेहरू के सभा के नेता होते हुए बैठे। मुझे सन्देह नहीं कि यह गर्व की भावना भविष्य में हमारे बच्चों में बनी रहेगी।

आज हमें सब से बड़ी आवश्यकता संगठन की है। हमारे प्रधान मंत्री ने अपने पद के सत्रह वर्षों में और देश सेवा के चालीस वर्षों में हमें यह सिखा दिया कि कठिन से कठिन परिस्थितियों का संगठित रह कर कैसे मुकाबिला किया जा सकता है। मैं अपने सभी मित्रों से निवेदन करता हूं कि अब समय आ गया है जब हम संगठित हो सकते हैं और प्रधान मंत्री की आत्मा को दिखा सकते हैं कि उनके द्वारा अधूरा छोड़े गये कार्य को पूरा कर सकते हैं।

भारत बड़ी परम्पराओं वाला देश है। भारत ने विश्व को बुद्ध और गांधी जी दिये आज हम विश्व को सप्रेम अपने प्रिय प्रधान मंत्री को देते हैं। प्रधान मंत्री तो आते जाते रहते ही हैं परन्तु जवाहरलाल जैसा प्रधान मंत्री आने में शायद कई शताब्दियां लगें। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह हमारे से बिछड़े हुए नेता की आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

Shri Yajnik (Ahmedabad) : Mr. Speaker, Sir, today India and the whole world is sorrowing over the sad demise of Panditji. Even the sky was overcast with clouds that day and it started drizzling and it looked as if the sky was also shedding tears of sorrow. When the funeral procession of Panditji started for Rajghat, even the earth trembled as if in sorrow.

Panditji's body has been reduced to ashes but his immortal soul will continue to inspire us for ever. I knew him since 1920 when the struggle for independence was going on. He took part in the home rule movement also. He participated in the Satyagraha movement launched by Mahatma Gandhi. He also took active part in the civil disobedience movement along with his father. He particularly noted that in the farmers movement in Uttar Pradesh he played a prominent role. He thought about the welfare of the farmers and

[Shri Yajnik]

the villagers very much. He was always observed with the poverty prevailing in the country side and used to devise ways to eradicate it.

Though Panditji is no more with us, yet we have to work for the welfare of the farmers and the rural areas and wipe out the evils of poverty and disparity prevailing there.

Panditji also took leading part in organising the workers. He took great pains for improving the working and living conditions of the working classes.

In the Karachi session of the Congress, Panditji put before us the picture of Independent India with the ideal of the upliftment of the farmers, labourers and the poverty-stricken people of India as its main task.

The whole country has co-operated in implementing the plans put forth by Panditji before the country after our independence and the Parliament has also approved of them. His dream was to take the country forward by acting upon the doctrine of democracy and socialism.

He had a great love for peace and non-alignment. I am reminded of the aggression of China when some people became worried and thought that we should join this bloc or that bloc. But Panditji advocated for the doctrine of non-alignment with full vehemence even at that critical hour. Great pressure was put upon him from certain quarters, but he stuck to the policy of non-alignment with resoluteness. He was very much in favour of some kind of agreement with Pakistan. About Kashmir he had declared that Kashmir would always remain an integral part of India. But above all, he was an apostle of peace. He wanted to have good relations with his neighbours at all costs, and he always strove for that.

He continued his struggle in the face of his ailment. This hastened his death. He knew no respite. 'Aaram Haraam Hai' was his slogan, throughout his life. We should take inspiration from his life. We have to make advancement keeping in view the ideals put forth by him before this country. We pray that the country advances along those ideals.

Dr. Govind Das (Jabalpur) : Mr. Speaker, Sir, as the oldest Member of the House I rise to pay my tributes to the late lamented Shri Panditji.

I saw honoured and respected Shri Malveyaji, Lala Lajpat Rai and Quide-azam Jinnah Saheb in this House. But the two different pictures of two great persons, Pt. Motilal Nehru and Pt. Jawaharlal Nehru, seen by me in this House have no parallel. Engaged in the task of ousting the then Government as a great leader of the Swarajya Party and the Congress Party, Pt. Motilal ji used to sit on the opposition Benches when the fight for independence was out But after independence, his son, Pt. Jawaharlal Nehru, occupied seat on the Treasury Benches as the Prime Minister of this country and run the Government. I am an humble student of history. Perhaps, such a thing has never happened by this country or in any country of the world. The world history has witnessed many great personalities. Mahatma Gandhi and Pt. Jawaharlal may be compared with Goutam Budha and Emperor Ashok. While Emperor Ashok emerged after a period of about 250 years after the passing away of Gautam Buddha. But the emergence of a great person *i.e.* Nehruji li Ashok so soon after the death of Mahatma Gandhi is a unique event in th history.

Some people are thinkers and some believe in action. Nehruji was a combination of both. Some people are politicians and some literary. But Panditji

had both these quaeties in him as well. To find such a combination in one single individual is a rare thing.

I have personal experience as to how great he was as a man. I have been in touch with the Nehru family for the last 44 years. Before holding the office of the Prime Minister, Pandit ji invariably used to stay at our house whenever he visited Jabalpur. Pandit Motilal also used to stay with us. I have reminiscence of that period saw a member of the Congress Party. The biggest proof as to how liberal he was, came last year when a Bill to continue English for an indefinite period was introduced in this House. A whip was issued which was ignored by me. When after voting against this Bill, I thanked Nehru ji for a liberal treatment meted out to me, he said in good humour, "what else could we do against you ?" This is a sign of greatness.

I would conclude after narrating a small incident which would prove that he used to remember so many personal small matters. I am an humble author and write dramas also. I used to narrate him my one act plays at times. I had written one drama against the "Buffet Dinner". Once while I was away at Badrinath, Panditji visited our house at Jabalpur on an invitation. On my return I met him, he said to me "Even at your house, I was served Buffet Dinner". Thus it will be seen that ever such trivial incidents reflected his greatness. Today our country has lost him. Not only our country, but in view of the present situation of the world, the whole world shares the grief on his death. Today our future is shadowed by darkness. But I am very optimistic. I am sure that the world would remain secure by the inspiration we and the world would get from his principles of Panchsheel as well as other priciples.

In the end, I pay my tributes to him.

Shri Ram Sewak Yadav (Bara Banki) : Sir, late Shri Jawaharlal Nehru was a valiant fighter in the struggle for India's freedom. The whole nation is grief stricken over his sad demise. We wanted him to be in our midst for many more years. It is our misfortune that he is no more with us.

There are important problems before the country. In the present state of affairs, his sad demise is all the more shocking. I, on my own behalf as also on behalf of my party, pay my heart-felt tributes to our late Prime Minister and offer my condolences to the bereaved family, especially to shrimati Indira Gandhi.

श्री मनोहरन (मद्रास दक्षिण) : संसद में डी० एम० के० पार्टी तथा श्री सी० एन० अन्नादुराई अपने नेता की ओर से उन भावनाओं का समर्थन करता हूं जिनको कि माननीय प्रधान मंत्री जी ने व्यक्त किया है। श्री नेहरु जी का स्वर्गवास हो गया है, हमारी कामना है कि उनका नाम सदा अमर रहे।

Shri Maurya (Aligarh) : Today when our country is passing through a crisis and our friends are becoming our enemies, exactly at that hour our beloved leader the life of our nation, the helper of the oppressed, harbinser of peace has disappeared. India needed the leadership of Shri Nehru today much more than ever before. India had become lifeless by his passing away. A great figure has disappeared from the stage of world politics. He was not only the Prime Minister of India but was also an accepted leader of the country. This is a rare example in the history of the democratic countires of the world.

[Shri Maurya]

Pandit Nehru fought against the forces of British Imperialism, like a great rebel and was successful in freeing the country from the yoke of British imperialism. And later on Steered the Ship of Independent India untiringly. He had become immortal for all times to come due to his selfess and unbiassed devotion to work. The Real way to pay tribute to him is to follow the path shown by him. His pledge was to create a socialistic society and establish democracy 2500 years. After the birth of Gautam Buddha there was born in this country a great human being who was known to the people of the world.

Today the oppressed classes feel firmless without Jawaharlal. With these words, I bow at the feet of Jawaharlal and pay him heartfelt tributes on behalf of the Republican Party of India.

Shri Prakash Vir Shastri (Bijnor) : A man of age was born in this country and gave us the fortune and honour of owning him. For this the Indians will always remain indebted to him. As a matter of fact he belonged to the whole world. In order to maintain peace and friendship in the world he had been labouring throughout his life. We feel that by his sad demise we have lost the pillar of our strength.

Mr. Speaker, Sir, you must have noticed that whenever he used to come to this House in his usual way with files in his hand and used to take his seat after bowing his head in reverence to you a strange calmness used to dawn upon the House and it looked as if the House was then full. On the last day of the last session, *i.e.* 6th May, 1964 when he was leaving this House who knew that he was saying good bye to this House and that he would not come to this house again. We had fought with him on many occasions and an various national issues. If we had known it before that he was not coming to this house again we would have offered to him our collective apology. But then it comes to our mind that he was a firm believer in democracy and welcomed healthy criticism. He had a heart as pure as that of a child and as brave as that of a youth. It now looks as if the special session of 27th May had been called so that the entire Parliament could be with him at the last hour.

I on my own behalf and on behalf of my colleagues in the Independent Party pray to the Almighty that his soul may rest in peace and the bereaved family may have sterngth enough to bear this great loss. I also pray that in this hour of national loss, the Almighty may bestow enough courage upon our countrymen and the leaders of this country to work unitedly and harmoniously by following the path shown by the departed leader of the nation.

With these words, I again pay my heartfelt tributes to the great leader and recite the yajur ved mantra,

श्रोंम क्रतो स्मर, क्लवे स्मर, क्रतं स्मर ।

श्री मुहम्मद इस्माइल (मंजेरी) : श्री जवाहरलाल नेहरू स्वतन्त्र भारत के प्रथम महान श्रौर ऐतिहासिक प्रधान मंत्री थे । महात्मा गांधी ने देश की स्वतन्त्रता के लिए जो युद्ध लड़ा था उसमें वह सब से श्रागे थे। वह बड़े योग्य श्रौर उच्च कोटि के राजनीतिज्ञ भी थे। वह विचारक भी थे श्रौर संसार प्रसिद्ध लेखक भी। वह हमसे श्राज जुदा हो गये हैं । पूज्य महात्मा जी के श्रनुयायियों में श्रग्रणी थे । श्रपनी योग्यता तथा श्रसामान्य गुणों के कारण वह श्रपनी मातृ भूमि की महान सेवा

कर सके। उन्होंने अपना सारा जीवन देश सेवा में लगा दिया। देश की स्वतन्त्रता के बाद उन्होंने अपनी सारी शक्ति देश को मजबूत बनाने और उसका संगठन करने में व्यतीत की।

श्री नेहरू जी में सज्जनता के असीम गुण विद्यमान थे। बच्चों के लिए उनमें अगाध स्नेह था। गरीब दुखी और देश के मेहनत मजदूरी करने वाले वर्गों से उन्हें विशेष प्रेम था। देश के विभिन्न वर्गों सम्प्रदायों में वह पूण सन्तुलन कायम रखते थे। मानव स्वतन्त्रता और विश्व शान्ति की दिशा में उनका अंश दान बहुत ही अद्वितीय है। इन प्रयत्नों के कारण ही वह देश में बहुत लोकप्रिय हो गये थे। और यह लोकप्रियता देश तक ही सीमित नहीं रही थी। समस्त संसार के लोग उनका आदर करते थे, उनकी प्रशंसा करते थे और उनके ऊंचे आदर्शों की सराहना करते थे।

ऐसे महान अद्वितीय प्यारे नेता का निधन सचमुच बड़ा दुख देने वाला है। यह ऐसी क्षति है जिसको पूरा नहीं किया जा सकता है। मैं इन शब्दों के साथ श्री नेहरू जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और इस मामले में इस सदन के अन्य माननीय सदस्यों के साथ शामिल होता हूं। मैं अपनी पार्टी की ओर से भी उन्हें अपने श्रद्धा के फूल भेंट करता हूं।

श्री कृपालानी (अमरोहा) : श्री जवाहरलाल नेहरू के निधन से जो दुख और सदमा हुआ है वह इस अवसर पर शब्दों द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता। परन्तु आज हम उन्हें स्नेह और आदर से श्रद्धा के फूल भेंट करने के लिये यहां प्रस्तत हैं। मेरा उनके साथ ४५ वर्ष का पुराना सम्बन्ध है। अतः इस अवसर पर हजारों स्मृतियां मेरे हृदय में उमड़ रही हैं। स्वतन्त्रता के बाद मुझे निरन्तर इस बात का खेद रहा कि बहुत सी बातों में हमारा प्रायः मतभेद रहा परन्तु इसके बावजूद हमारा प्रेम एक दूसरे के लिये उसी तरह रहा जिस तरह कि पिछले ३० वर्षों में परस्पर काम करते समय था।

उनका लालन पालन बड़ी अमीरी हालात में हुआ परन्तु जब राष्ट्र की आजादी का प्रश्न सामने आया तो उन्होंने अपने तमाम भौतिक सुखों को त्याग कर स्वतन्त्रता के युद्ध में कूद पड़े। वह गरीब और दबाये हुए लोगों की सेवा के लिये आगे बढ़े। केवल वही लोग जिन्होंने स्वतन्त्रता आन्दोलन से पहले जवाहरलाल को देखा था इस बात को महसूस करते थे कि किस प्रकार उनके जीवन में एक बहुत बड़ी क्रांति आ गयी थी।

वह महान सेनानी थे और निरन्तर देश की स्वतन्त्रता के लिए युद्ध करते र। उनका विचार था कि स्वतन्त्रता परमात्मा की ओर से इन्सान को दिया गया एक बहुमूल्य उपहार है। जब कोई राष्ट्र अप ी आजा ी खो बैठता है तो वहां के इन्सान ईन्सान भी नहीं रहते। यह उनका विचार था। वैसे भी धर्मशास्त्रों के अनुसार मनुष्य का सब से बड़ा उद्दश्य मोक्ष प्राप्त करना होता है। श्री जवाहरलाल नेहरू देश और राष्ट्र के मोक्ष के लिये लड़ते रहे। अपने देश की आजादी का युद्ध लड़ते हुए वह संसार भर में चल रही गति विधियों की ओर भी पूर्णरूप से सचेत थे। मुझे याद है जब स्पेन में गृह युद्ध हो रहा था तो उन्होंने कहा था मेरा जी करता है कि स्पेन की आजादी की रक्षा करने के लिये बन्दूक उठा कर युद्ध करूं। मुझे इसमें सन्देह नहीं कि यदि स्वतन्त्रत की कोई लड़ाई वहां न लड़ी जाती तो वह उसकी ओर आकृष्ट न होते। परन्तु स्पेन का वह आन्दोलन बड़ा ही महत्वपूण था, उसके असफल हो जाने के कारण नाज़ी तथा तानाशाही शक्तियों को यूरुप में प्रोत्साहन मिला। और अन्ततोगत्वा गत विश्व युद्ध लड़ा गया। इस तरह वह विश्व के एक बहुत महत्वपूर्ण नागरिक थे। और अनुभव करते थे कि सारे विश्व के कल्याण का

[श्री कृपालानी]

उत्तरदायित्व उनके कन्धों पर है। स्वतन्त्रता के बाद श्री जवाहरलाल नेहरू ने इंडोनेशिया को हॉलेंड की गुलामी से आज़ाद कराने के लिए पूर्ण समर्थन प्रदान किया।

उनका दिल स्वयमेव ही दुखी और दमन किये हुए लोगों की सेवा की ओर आकृष्ट हो जाता था। चाहे यह लोग संसार के किसी भी भाग में क्यों न हों, चाहे एशिया में हों चाहे अफ्रीका में। वह केवल भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में ही हिस्सा नहीं लेते थे बल्कि गांधी जी की तरह स्वतन्त्र भारत का नक्शा भी उनके दिल और दिमाग में था। यह ठीक है कि उनके दिमाग का नक्शा गांधी जी के नक्शे से भिन्न था। वह भारत को आधुनिक लाइनों पर चलाना चाहते थे, वैज्ञानिक भावना पैदा करना चाहते थे। देश में वैज्ञानिक भावना भर कर औद्योगिक क्रांति कर दिखाना चाहते थे। उसी प्रकार जिस प्रकार कि औद्योगिक क्रांति पश्चिम में हो गयी थी। यह बड़ा महान और कड़ा कार्य था। राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के युद्ध से भी कड़ा कार्य। संसार में इस प्रकार का कार्य बड़े नृशंस दंगों से होता आया है, परन्तु श्री जवाहरलाल शान्ति अहिंसा तथा लोक तंत्रीय ढंगों से यह क्रांति लाना चाहते थे। समय ही बतायेगा कि यह हो सकती थी कि नहीं परन्तु उन्होंने अपनी शक्ति के अनुसार यह प्रयत्न अवश्य किया कि किसी भी प्रकार की हिंसा न की जाये। उन्होंने अपनी स्वतन्त्र विचारधारा तथा लोकतन्त्रीय परम्पराओं का पूरा ध्यान रखा।

अब हमने यह देखना है कि जो काम उन्होंने अपने सामने रखे थे वह हमारा राष्ट्र पूरे कर सकता है कि नहीं। आज हम उनकी मृत्यु से हुई क्षति का मातम मना रहे हैं। यद्यपि वह विश्व नागरिक थे परन्तु इस उपमहाद्वीप को संगठित करना चाहते थे। वह चाहते थे कि हमारे देश के लोग बिना किसी जात पात, धर्म और स्त्री पुरुष के भेद भाव के एक हो जायें। सब से बड़ी बात यह थी कि वह इस देश में रहने वाले अल्पसंख्यकों के पूरे मित्र थे। जब भी उन्हें कोई दुख महसूस होता था तो वह उनकी सहायता के लिये आ खड़े होते थे। आज देश के सामने राष्ट्र की एकता और संगठन का प्रश्न है। मेरे विचार में यदि हम सचमुच अपने आपको इस काम में लगा दें तो यह उनकी याद में सबसे बड़ी श्रद्धांजलि है। मैं भी पुराना कांग्रेस जन हूं। अतः उस नाते से कांग्रेस से यह कहना चाहता हूं कि उन्हें अपना संगठन मजबूत रखना चाहिए। यदि वह संगठन मजबूत रखेंगे तो तब ही वह राष्ट्र का संगठन भी कर सकेंगे।

Shri Bishan Chander Seth (Etah): Mr. Speaker, Sir, I think it is enough to say regarding Pandit ji that he was one of the few greatest man of the world. Today the most important problem before India is whether the fame attained by her as a real gem of the world under the able guidance of Panditji will remain unabated in future also?

I pray to God that a great man may emerge in our country so that we may maintain our international status and importance in the coming years also. All of us must have witnessed the unprecedented sense of grief at the death of Shri Jawahar lalji. You cannot find any parallel in the history of India when all the countrymen stopped all their activities on their own sweet will. Nobody had asked them so, even then the markets all over the country remained closed. Every section of our people had goodwill for him and the whole country paid its tributes to him with one voice. The most surprising feature is that all the Members of the oppostion including me were shocked at the death of Pandit ji.

It cannot be gain said that firmness in his beliefs was his main attribute. Today when we are in the midst of dangers from all sides, I would request the

hon. members of the Treasury Benches to carry own the Government with the same firmness as heretofore. without making any changes in those policies.

We hope that our Government will continue to function with the same spirit and firmness so that we may serve as a guiding force to the whole world. I think that will be our most fitting tributes to the revered leader.

श्री बदरूद्दुजा (मुर्शिदाबाद) : अध्यक्ष महोदय, मैं अश्रुपूर्ण नेत्रों से इस युग के महानतम व्यक्तियों में से एक ऐसे व्यक्ति को अपनी नम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं जिसने महान कार्य किये जिनकी अमिट छाप अनन्तकाल तक बनी रहेगी। इस महान व्यक्ति में कुछ ऐसी विशेषता तथा अजीब बात थी कि बिना किसी दिखावे तथा सत्ता के लोभ के वह ब्रिटिश साम्राज्यवाद के काले दिनों में अपने देशवासियों को प्रभावित करने में पूर्ण रूप से सफल हुआ और उन्हें ऐसे रासते पर चलने के लिये प्रेरित किया जिस पर कि कोई भी साधारण व्यक्ति चलते हुए कांपता है। इस महान व्यक्ति के बारे में कुछ विशेष बातें हैं जिसने कुछ अन्य देशभक्तों के सहयोग से अनेक यातनायें सहन करके देश में एक नई शक्ति को जन्म दिया जो आधुनिक भारत को अंग्रेजों के चंगुल से मुक्त कराने में सहायक सिद्ध हुई।

वे एक महान राजनीतिज्ञ, विचारक, विद्वान, देशभक्त, मानव हितैषी तथा राष्ट्र निर्माता थे, जिनको विधाता ने ही गत सत्रह वर्षों तक भारत की जिम्मेदारियों का बोझ उठाने के लिये भेजा था। उनके विचारों का गम्भीर तथा तीव्र विरोध होने पर भी वह आगे ही बढ़ते गये तथा भारत के भविष्य को उज्जवल बनाते गये।

यद्यपि इस महान व्यक्ति से देश तथा विदेश के बहुत से व्यक्तियों के राजनैतिक तथा सैद्धांनेतिक विरोध थे परन्तु किसी ने भी उनकी योग्यता, राजनैतिक महानता, रचनात्मक शक्ति, त्याग, सेवा तथा भारत के राजनतिक तथा सामाजिक जीवन में अंशदान के बारे में विवाद नहीं किया है।

आज वह महान व्यक्ति हमारे बीच में नहीं है। वे धर्मनिरपेक्ष भावना के सब से महान समर्थक थे लोकतंत्रीय विचारों से पूर्णतया विश्वास रखते थे तथा जो भारत की स्वतन्त्रता सत्यता, न्याय और मानव जीवन के आदर्शों के प्रतीक थे।

तीन अथवा चार सप्ताह पहले अल्पसंख्यकों के कल्याण तथा पाकिस्तान और भारत के विवाद सम्बन्धी संकल्प पर बोलते समय मैंने कहा था कि भगवान उनको चिरायु करे क्योंकि उनकी आयु का सांध्यकाल आ गया है और मेरी उनसे अपील थी कि भारत में प्रतिक्रियावादी दलों को सिर उठाने से पहले ही उन्हें कुचल दें और इतिहास में। जो आज ये दल तेजी से सिर उठा रहे हैं और इतिहास में इसलिये याद रखे जायेंगे कि उन्होंने असन्तोष तथा निराशा के वातावरण को दूर कर स्थायी शान्ति का वातावरण पदा किया। । परन्तु अफसोस है कि एक ऐसा भयंकर मौका आया जिससे कि वह ऐसा कदम उठाने से पहले ही इस संसार से बिदा हो गये।

हमारा बड़ा ही नकसान हो गया है। यह नुकसान शताब्दियों तक पूरा नहीं हो सकता है। आज मुझे बड़ा शोक है और मैं सभा में व्यक्त किये गये विचारों से पूर्ण सेहमत हूं तथा इस युग के महानतम व्यक्ति को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री कपूर सिंह (लुधियाना) : श्रीमान्, शिरोमणि अकाली दल के प्रतिनिधि के रूप में मैं पंडित जवाहरलाल नेहरू के निधन पर सिख जनता की श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

805 (Ai) LS—2.

स्वर्गीय प्रधान मंत्री एक ऐसे नेता थे जो स्वयं भारत के प्रतीक थे। यद्यपि वर्तमान से भविष्य का निर्णय नहीं किया जा सकता है परन्तु मुझे विश्वास है कि भविष्य से पता लग जायेगा कि उन का बीसवीं शताब्दि के उत्तरार्द्ध में अपना महत्वपूर्ण स्थान था।

वह भावक तथा उदार व्यक्ति थे। वह बड़े अच्छे मित्र थे। वह दूरदर्शी राजनीतिज्ञ थे। यद्यपि कुछ व्यक्ति उनके विचारों से सहमत नहीं थे परन्तु उन के उद्देश्यों पर किसी ने भी शंका प्रकट नहीं की थी। उन का राजनैतिक व्यक्तित्व केवल इस देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी फैला हुआ था।

देश में हुई सफलताओं तथा असफलताओं के आधार पर उन की महानता का सच्चा मूल्यांकन नहीं किया जा सकता है। उन के विचारों तथा योग्यता के कारण हम उन को सदैव बने रहने वाले भारत तथा विज्ञान युग को मिलाने वाला कह सकते हैं। उन को विज्ञान में विश्वास था। लोकतंत्रीय पद्धति में विश्वास था। वह सहनशील थे। उन्होंने नव युग का निर्माण किया अर्थात् स्वतंत्र भारत में धर्मनिरपेक्षता की भावना, विज्ञानिक वाद तथा लोकतंत्र की स्थापना की। यदि वह चाहते तो इन सिद्धान्तों के प्रतिपादन के लिए उन्हें सिखों में बहुत से व्यक्ति मिल जाते परन्तु वह सिखों को समझ नहीं सके।

गुरु नानक के शब्दों में—

'मरना मुनसा सूरियां हक हैं जे, होए मरे परवानो'

अर्थात् उन्होंने अपने उद्देश्यों को पूरा करने में ही अपना जीवन लगा दिया। हमें उनके निधन का हार्दिक शोक है।

श्री अ० क० गोपालन (कासरगोडा): अध्यक्ष महोदय, मैं भी अपने उन सभी मित्रों के साथ हूं जिन्होंने दिवगत नेता के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की है। मैं उन हजारों व्यक्तियों में से एक हूं जिन का राजनैतिक जीवन उन के द्वारा प्रचार किये गये सिद्धान्तों से बहुत प्रभावित हुआ है। उनके नेतृत्व में हम राजनैतिक कार्यकर्ता बने और साम्राज्यवाद के विरुद्ध लड़े तथा स्वतत्रंता, लोकतंत्र तथा सामाजिक न्याय के लिये संघर्ष किया। वह हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन के सब से शक्तिशाली नेता थे।

हमें उन के निधन से ऐसा नुकसान हुआ जो पूरा नहीं किया जा सकता। हम अपना नुकसान केवल समाजवाद की सफलतापूर्वक स्थापना से ही पूरा कर सकते हैं। मैं वचन देता हूं कि मैं तथा मेरे साथी समाजवाद की स्थापना में पूरा सहयोग देंगे।

अध्यक्ष महोदय: प्रिय स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए मेरा मन बड़ा दुखित है। राष्ट्र की ज्योति बुझ गई है और हम भयंकर निराशा के भवर में आ गये हैं। राष्ट्र को उनके निधन से जो महान् क्षति हुई है, उस का शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। इस क्षति को पूरा नहीं किया जा सकता है।

इस समय जवाहरलाल के बिना इस सभा की कल्पना करना भी कठिन हो रहा है। अपने अनुभव के आधार पर मैं यह कहता हूं कि उन को लोक सभा में प्रवेश करते देख कर प्रसन्नता होती थी। वे बड़ी शिष्टता से अपने स्थान तक आते थे और अध्यक्ष-पीठ का बड़ा आदर करते थे। गणपूर्ति

अथवा विभाजन की घंटी बजने पर, यदि वह संसद् भवन की सीमा में होते थे, तो सब से पहले सभा-भवन की ओर वे ही दौड़ते थे।

जब वह अपने स्थान पर बैठे होते थे, तो सभा की कार्यवाही को ध्यान से सुनते थे चाहे कभी वे अपनी फाइलों में ही उलझे नजर आते थे। प्रश्नों के उनके उत्तर बड़े समझदारीपूर्ण और पूरी जानकारी देने वाले होते थे। वह हमेशा पूरी जानकारी देने को आतुर रहते थे और कई जब जब वह यह समझते कि अन्य मंत्रियों द्वारा दी गई जानकारी पर्याप्त नहीं है तो वे स्वयं जानकारी दे देते थे। उनके पास समुचे प्रशासन की विस्तृत जानकारी रहती थी और यह जानकारी संसद् को देने में वह कभी भी झिझकते नहीं थे। पंडित जवाहरलाल ने एक स्तर बना रखा था और वे लोकतंत्र में कई अच्छी परम्परायें छोड़ गये हैं। जवाहरलाल से बड़ा लोकतंत्र-प्रेमी व्यक्ति पाना कठिन है। वह अपनी स्वयं की आलोचना को बड़े धैर्य और शान्ति से सुनते थे और बिना किसी विद्वेष के उसका उत्तर देते थे। उनके व्यक्तित्व में देश के अतीत की महानता, वर्तमान संघर्ष और भावी महत्वाकांक्षाएं झलकती थीं।

जवाहरलाल हमारे इतिहास के बड़े संकट-काल में हमसे छीन लिये गये हैं। हमारे सामने दूसरे देशों की धमकियां और आन्तरिक कठिनाइयां हैं। इस समय हमें उन की बहुत आवश्यकता थी। आज वे हमारा पथ-प्रदर्शन करने के लिये हमारे बीच नहीं हैं लेकिन हर भारतीय के हृदय में उन के लिए परम स्थायी और आदरणीय स्थान है। गांधी जी का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा था कि वे भारतीयों के दिमाग में और वर्तमान युग में एक ऐसी अमिट छाप छोड़ गये हैं जो कभी मिटाई नहीं जा सकती। ये शब्द अब स्वयं उन्हीं पर लागू होते हैं। भारत नेहरू जी द्वारा इस महान् देश को और महान् बनाने के लिये उनके विश्वास और साहसिक प्रयत्नों के लिये उनको सदैव याद करता रहेगा।

इस संसार में नेहरू ने अपना जीवन राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिये संघर्ष के लिये समर्पित कर दिया और स्वतंत्रता प्राप्त होने पर उन्होंने भारतीय समाज में फैली आर्थिक और सामाजिक बूराइयों को दूर करने के लिये संघर्ष जारी रखा।

नेहरू मानव के गौरव का प्रतिनिधि थे, जो कि उन्हें सब से बड़ी समृद्धि से भी प्रिय था। दूसरे देशों के शोषित लोगों के लिये उन के हृदय में असीम दर्द था। सभी प्रकार के उपनिवेशवाद, राजनीतिक अथवा आर्थिक, के विरुद्ध युद्ध करने को वह सदा तत्पर रहते थे। उन से केवल लाख भारतीयों ने ही प्रेरणा नहीं ली अपितु वे एशियाई और अफ्रीकी राष्ट्रीयता के प्रतीक थे जिनसे साम्राज्यवाद की छाया में रह रहे लोगों ने प्रेरणा ली और अपना मार्ग-दर्शन किया। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में उन्होंने हमेशा दबे हुए लोगों की वकालत की और उनकी भावुक और मानवीय भावना से ओत प्रोत आवाज को उन के मत से भिन्न लोग भी बड़े आदर के साथ सुनते थे? इतने महत्व का जीवन इतिहास में बिरला ही मिलता है।

जवाहरलाल नेहरू आधुनिक भारत के निर्माता थे और उन का सारा जीवन राष्ट्र को समर्पित था और वह राष्ट्र के हितों के लिये कार्य करते करते उन का स्वर्गवास हो गया। उनकी मृत्यु से भारत ने एक बड़ा नेता और विश्व का एक महान् सपूत खो दिया है जो हर जगह मानव-जाति के लिये शांति, न्याय और गौरवता की वकालत किया करता था।

संसार के किसी अन्य नेता की अपेक्षा जवाहरलाल विश्व शांति में बड़ा विश्वास रखते थे। उन्होंने शान्ति के लिये महान् कार्य किया। युद्ध और भय से रहित संसार के लिये अपने निडर कार्य द्वारा उन्होंने सारी मानव जाति की सेवा की। वह अपने पीछे एक ऐसा नाम छोड़ गये हैं जो इस युद्ध पीड़ित विश्व में आने वाली पीढ़ियों को भी आदर से याद रहेगा।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के प्रधान मंत्री के रूप में उन के जीवन का अवलोकन करने से पता चलेगा कि एक दशाब्दी के कठिन समय में, जबकि महात्मा गांधी जी की हत्या कर दी गई थी, जवाहरलाल ही हम लोगों के मार्ग-दर्शक और नेता थे। हमें विश्वास है कि लोकतंत्री, धर्मनिरपेक्षता और सुनियोजित राष्ट्रीय रहन-सहन के जिस पौधे को उन्होंने लगाया है वह पनपेगा।

आज हम उनके निधन पर शोक मनाते हैं और हमेशा मनायेंगे क्योंकि हम मनुष्य हैं और अपने प्रिय नेता को भूल नहीं सकते। लेकिन हमें पता है कि इस प्रकार शोक मनाना उन को अच्छा नहीं लगता था क्योंकि उन ही के अपने शब्दों में वह श्रद्धांजलि अर्पित करने का निम्न तरीका है। उन के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने का केवल एक ही तरीका है कि हम यह प्रण करें कि हम उस कार्य को पूरा करेंगे जोकि वह अन्त समय तक करते आये थे।

नेहरू की महानता और मानवता का इससे अधिक कोई प्रतीक नहीं हो सकता जोकि उन्होंने ने एक बार स्वयं यह कहा था कि :

> "यदि कोई मनुष्य मेरे बारे में कुछ सोचे तो मैं यह चाहूंगा कि वह यह कहे : वह एक ऐसा व्यक्ति था जिसने अपने दिल और दिमाग से भारत और भारत के लोगों से स्नेह और प्यार किया और उसके बदले में उन्होंने उस को और भी अधिक प्रेम अर्पित किया।"

हमने उनको अपना स्नेह दिया और उनका आदर किया और हम उनके आदर्शों पर चलते हुए सदैव उन्हें याद रखेंगे।

उनके देहावसान से जो क्षति हुई है, उस को पूरा करना असम्भव है। अनेक वर्षों तक उन जैसा व्यक्ति हमें प्राप्त हो सकना संभव नहीं। हमें इस बात से तसल्ली होनी चाहिये कि उन्होंने हमें लक्ष्य प्राप्ति का मार्ग दिखा दिया है और आने वाले वर्षों में इन से हमें प्रेरणा मिलती रहेगी।

ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे, और हमारे राष्ट्र को शक्ति और एकता प्रदान करे ताकि हम उन के उत्तरदायित्व को संभाल सकें।

श्री नन्दा : मैं प्रस्ताव करता हूं :

> "हमारे प्रिय नेता और प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू के देहावसान से उत्पन्न राष्ट्रीय संकट की छाया में हो रही इस बैठक में लोक-सभा गहरी वेदना और शोक प्रकट करती है और यह दृढ़ संकल्प करती है कि वह विश्व शान्ति तथा शान्ति और राष्ट्रीय एकता, अखण्डता तथा समृद्धि के आदर्शों की प्राप्ति के लिए सदा प्रयत्नशील रहेगी जिसके लिए हमारे प्रिय नेता ने अपना सारा जीवन न्यौछावर कर दिया।"

अध्यक्ष महोदय : मैं समझता हूं कि सभा इस संकल्प से सर्वसम्मति से सहमत है। सदस्यगण कुछ देर अपने अपने स्थानों पर मौन खड़े रहें।

इसके पश्चात सदस्यगण थोड़ी देर तक मौन खड़े रहे ।

The members Then stood in silence for a Short while.

संकल्प सर्व सम्पति से स्वीकृत हुआ।

The resolution was adopted unanimously

अध्यक्ष महोदय : अब सभा स्थगित होती है और यह सोमवार, १ जन, १६६४ को प्रात: ११ बजे समवेत होगी।

इसके पश्चात लोक-सभा सोमवार, १ जुन १६६४ ११ ज्येष्ठ, १८८६ (शक) के ग्यारह बजे तक के लिये स्थगित हुई।

The Lok Sabha Then adjourned till eleven of the clock on Monday, the 1st June, 1964/Jyaistha 11, 1886 (Saka)

GMGIPND—LS III—805 (Ai) LS—15-7-64——600.